७. यथार्थ -२ : व्यापक वस्तु

दिनांक : २५/०९/११

व्यापक वस्तु को ब्रह्म, परमात्मा, ईश्वर नामों से भी कहा जा सकता है | इन तीनों नामों से इंगित यथार्थ यही है कि नाम के रूप में व्यापक बताया गया है | बताने वाला कार्य आदर्शवादी विधि से हुआ है | व्यापक क्या होता है पूछने पर, लिखित रूप में यही लिखा है कि व्यापक में व्यापक समाया है | जैसा सोना में सोना समाया है | इससे कोई व्यवहारिक प्रयोजन नहीं निकलता, प्रमाणित होने का अर्थ नहीं निकलता |

मध्यस्थ दर्शन,सह-अस्तित्ववादी विधि से किये गए अध्ययन से व्यापक वस्तु का अनुभव होना, अनुभव प्रमाण रूप में व्यक्त होना पाया गया है | अनुभव प्रमाण के बिना मानव सार्थक होता ही नहीं, तृप्ति होता ही नहीं, प्रमाणित होता ही नहीं | यह भी एक मुद्दा है | मानव को मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद में ज्ञानावस्था में होना बताया गया है | ज्ञान का स्वरुप मध्यस्थ दर्शन के अनुसार अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान को ज्ञान माना गया है | यह प्रमाणित होता है, इसी का नाम है अनुभव प्रमाण | अनुभव प्रमाण में बताया गया है कि अस्तित्व दर्शन ज्ञान, सह-अस्तित्व में ज्ञान, सह-अस्तित्व में जीवन ज्ञान, सह-अस्तित्व में मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान है | यह ज्ञान समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व के रूप में व्यवहार में प्रमाणित होता है | इसको अनुभव प्रमाण बताया गया है |

अनुभव प्रमाण ही प्रधान प्रमाण है | इसी के आधार पर विचार प्रमाण, व्यवहार प्रमाण होना भी बताया गया है | विचार प्रमाण में यह स्पष्ट किया गया है कि नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य विचार प्रमाण के रूप में प्रमाणित होता है | ये छः प्रकार से प्रमाण अनुभवमूलक विचार के आधार पर ही बनता है | अन्यथा यह ध्रुवीकरण नहीं होता है | जिसमें से नियम, नियंत्रण, संतुलन चारों अवस्थाओं के साथ वर्तमान होता है तभी संतुलन होना बन पाता है | जबकि न्याय,धर्म,सत्य मानव-मानव के साथ प्रमाणित होता है | इसको स्पष्ट किया जा चुका है | यह मानव के साथ ही अध्ययनगम्य होता है | स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष एवं दयापूर्ण कार्य व्यवहार को व्यवहार प्रमाण के रूप में अध्ययन कराता है | यह तीनों विधि से प्रमाण सम्पन्न मानव परम्परा ही जागृत मानव परम्परा कही गयी है |

अभी तक मानव जीव चेतना में जीते हुए जीवों से अच्छा जीने के लिए प्रयत्न किया है | जीव चेतना विधि से ही चारों विषयों, पाँचों संवेदनाओं को राजी करने में मानव लगा रहा जबकि विषय तृप्ति होती नहीं अर्थात तृप्ति की निरंतरता नहीं होती | इसी प्रकार संवेदनाओं का तृप्ति नहीं होता है | इनमें नियंत्रण क्रम में संवेदनाओं में नियंत्रण ही विषयों में नियंत्रण है न कि निर्मूलन | आदर्शवाद निर्मूलन के लिए उपदेश देता है | निर्मूलन होना प्रमाणित होता नहीं | इसी क्रम में नियंत्रण की बात कहता है कि हर व्यक्ति इसे सोच सकता है, विचार कर सकता है, प्रयोग कर सकता है कि संवेदनाओं का नियंत्रण आवश्यक है की नहीं | इसका सर्वेक्षण में नर-नारियों में नियंत्रण के पक्ष में सहमति होती है | संवेदना की परिभाषा में यही स्पष्ट होता है कि संज्ञानीयता सम्पन्न होने की वेदना अर्थात पूर्णता को प्राप्त करने की वेदना | मानव परम्परा में पूर्णता क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता के रूप में देखा गया है | क्रियापूर्णता को दायित्व, कर्तव्य के निर्वाह के रूप में पहचाना गया है | संज्ञानशीलता का दूसरा भाग

उपकार के रूप में पहचाना गया है | इसे हर व्यक्ति चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से अध्ययनपर्वक समझ सकता है | उपकार का आशय समझदारी को अपने अपने संतानों में प्रवर्तित करने से है | समझदारी ही ज्ञान है और ज्ञानपूर्वक जीने से पीढ़ी से पीढ़ी प्रवर्तित करना बनता ही है | यही दायित्व का अर्थ है | साथ में व्यवहार प्रमाण, विचार प्रमाण और अनुभव प्रमाण रूप में प्रमाणित होना बनता है | यही वर्तमान का तात्पर्य है | कर्तव्य के रूप में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना ही कर्तव्य के रूप में बताया गया है | न्यायपूर्वक जीने के क्रम में दायित्व कर्तव्य पालन होना बन जाता है |

इसलिए न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक जीना ही दायित्व, कर्तव्य बताया गया है | मनुष्य के जीने में ही सार्थकता होना सम्भवहै | सार्थकता के अर्थ में अनुभव, विचार, व्यवहार प्रमाणपूर्वक ही मानव का वैभव होना स्पष्ट है | अनुभव प्रमाण समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सहज प्रमाण ही है | ऐसे अनुभव प्रमाण के आधार पर विचार प्रमाण होना स्पष्ट है | विचार प्रमाण का स्वरुप नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य ही है | विचार प्रमाण सम्मत विधि से व्यवहार प्रमाण होना पाया जाता है | व्यवहार प्रमाण का स्वरुप स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में अध्ययनगम्य हो चुका है | इसके अध्ययन के लिए चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रस्तावित है | हर मनुष्य इसका अध्ययन कर सकता है | पहले कहे गये तीनों प्रमाणों को प्रमाणित करना ही जागृति सहज प्रमाण है | ऐसी जागृत परम्परामें ही चारों अवस्था में उपयोगिता, पूरकता सिद्ध कर चुके हैं | इसे लोकव्यापीकरण करना ही हमारा उद्देश्य है जिससे धरती स्वर्ग होने, मानव ही देवी देवता होने, धर्म सफल होने, नित्य शुभ होने का स्थिति गति परम्परा के रूप में प्रमाणित होता है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत